## 22. एक अनाथ का जन्म

आईएमएक्स इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा, "पत्र प्राप्त करने के बाद (प्रदर्शन 1 देखें), मैं दो दिन तक भोजन नहीं ले पाया"। "पहले सम्मेलन का आयोजन करने के लिए (जब संस्थान में इसके लिए कोई बुनियादी ढांचा भी नहीं था) सभी श्रमसाध्य प्रयासों के बाद, तो यही आपको प्रोत्साहन मिलता है। मुझे चारों ओर भागना था और ब्रोशर के प्रिंटिंग, प्रतिनिधियों को, बुलाना, पंजीकरण शुल्क लेना, बिलों का भुगतान करना, पेशेवर निकाय (Professional Society) बनाना आदि सब कुछ के लिए जवाबदेह था। और निर्देशक केवल सवाल पूछने और अनुमति देने से इनकार करने के लिए थे। अगर परियोजना प्रबंधक (Project Manager)) और मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (Chief Administrative Officer) में मेरे अच्छे दोस्त नहीं होते, तो सम्मेलन ही नहीं हो पता। और उस पर तुर्रा यह कि वह (निदेशक) उन चीज़ों के लिए अपमानित महसूस कर रहे थे जो मेरे स्मरण में मैंने किया ही नहीं था "। "फिर आगे कभी नहीं, मैंने कसम खा ली। ", उन्होंने बात ख़त्म की ।

**उत्पत्ति**

सम्मेलन की उत्पत्ति पहली संकाय विकास कार्यक्रम थी। आईएमएक्स 10 सालपुराना हो चुका था उसके पास प्रबंधन विकास कार्यक्रमों (MDP)/ सम्मेलनों (Conferences) इत्यादि के लिए कोई नियमित बुनियादी ढांचा नहीं था। यह 18 सीटवाले व्याख्यान कक्ष और 20 कमरों और चलताऊ बोर्डिंग / लॉजिंग सुविधा वाले गेस्ट हाउस से काम चला रहा था के साथ काम कर रहा था। निदेशक के खिलाफ संकाय और कर्मचारियों द्वारा एक बड़ी हड़ताल के बाद (जिसमें प्रोफेसर नंदकुमार ने किसी का भी पक्ष लेने से मना कर दिया था), निदेशक प्रोफेसर प्रसाद, केवल 120 एमबीए छात्रों के बैच से खुश थे, जिसमे पिछले 7 सालों से कोई बढ़ोतरी नहीं हुई थी।

अगस्त 1994 के आसपास, प्रो प्रसाद को एआईएमएस (AIMS) के उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया था। अप्रैल 1995 में, एआईएमएस ने एम्स-सीसीएमएस (AIMS- CCMS) कार्यक्रम के अंतर्गत अनुसंधान, संकाय विकास कार्यक्रम आदि के लिए अनुदान प्रदान के लिए प्रस्ताव आमंत्रित किये । निदेशक ने प्रोफेसर नंदकुमार को कुछ प्रस्ताव देने के लिए कहा। बाद में "एक सामरिक प्रबंधन पाठ्यक्रम (Strategic Management Course) कैसे शुरू लिया जाए" विषय पर संकाय विकास कार्यक्रम (FDP) के लिए एक प्रस्ताव बनाया और कार्यक्रम 22-27 जनवरी, 1996 से आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 35 प्रतिभागियों आए, जिनमे से आधे से ज्यादा रीडर , प्रोफेसरों, एचओडी, एमबीए अध्यक्ष आदि थे । उन्हें 20 प्रतिभागियों के लिए सुविधा में समावेशित (accomodate) करना था।

किसी तरह, प्रतिभागियों को कार्यक्रम की शैक्षणिक पद्धति पसंद आई और कार्यक्रम के अंत में बिदाई सत्र में उन्होंने एक कम लागत वाला मंच स्थापित करने का अनुरोथ किया जिससे वे अपने खर्च पर भी वर्ष में कम से कम एक बार (कॉलेजिएट सिस्टम के माध्यम से) खुद को अपडेट कर सकें। प्रोफेसर नंदकुमार इस तरह के एक अनुरोध पर थोड़ा सकपकाए हट कर अपने पीएचडी गाइड, प्रोफेसर गणेश, (जो स्वयं जो स्वयं मानव संसाधन मत्रालय के अंतर्गत एक अग्रणी प्रबंधन संस्थान के निदेशक थे) से संपर्क किया और पूछा कि क्या

DO NOT COPY

वे एक ऐसी पहल के लिए नेतृत्व प्रदान कर सकेंगे। उनकी उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया पर, एक मंच तैयार करने का निर्णय लिया गया जिसमें प्रोफेसर गणेश के अध्यक्ष और कार्यक्रम के एक प्रतिभागी  प्रो विट्ठल को सचिव बनाया गया। यह भी निर्णय लिया गया 27 जनवरी, 1997 को पहली सम्मेलन में होगा, बिदाई दिन से ठीक एक वर्ष बाद।

एक अन्य भागीदार, (जो एक अग्रणी प्रबंधन संस्थान बीआईबीएम के एक वरिष्ठ प्रोफेसर थे), ने पहले सम्मेलन का आयोजन करने की पेशकश की। प्रो विट्ठल को दिल्ली में सोसाइटी में पंजीकृत बनाने और निकाय करना था। लेकिन जब प्रो गणेश ने अगस्त 1996 में बीआईबीएम संस्थान के निदेशक से संपर्क किया, तो उन्होंने खेद व्यक्त कर दिया। इसके बाद उन्होंने अपने संस्थान (आईपीएक्सएम) में भी संभावनाओं का पता लगाया, लेकिन प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का बुनियादी ढांचा (infrastructure) पहले ही उन दिनों की कुछ अन्य कार्यक्रमों के आयोजन के लिए प्रतिबद्ध था।

**अवसर**

प्रो। प्रसाद ने प्रोफेसर नंदकुमार को एआईएमएस  (AIMS) के वार्षिक सम्मेलन जैसे सम्मेलन का आयोजन करने के लिए भी कहा था। अक्टूबर 1996 में, जब प्रोफेसर नंदकुमार को पता चला कि दूसरी संभावना भी ठीक नहीं हो सकती है, तो प्रो नंदकुमार को आईएमएक्स को पहले सम्मेलन की मेजबानी करने का मौका लगा।

"बीस साल पहले, 1976 में मेरे शिक्षक प्रो सी.के. प्रहलाद ने उल्लेख किया था कि व्यावसायिक (professional) उन्नति के लिए प्रत्येक ऐकडेमिक क्षेत्र (discipline ) में संकाय सदस्यों को वर्ष में कम से कम एक बार, अनुभवों का आदान-प्रदान करना, उनका काम बांटना, संयुक्त अनुसंधान और साहित्य विकास, संकाय विकास आदि के लिए अन्य संस्थानों के संकाय सदस्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाना चाहिए। "चूंकि सम्मलेन का सुझाव जनवरी 1996 में संकाय विकास के सहभागियों से उभरा था, इसलिए मैंने सोचा कि शायद सम्मलेन इस मंच को खड़ा करने में सहायता कर सके । जब निकाय के अध्यक्ष ने कठिनाइयों को व्यक्त किया, तो मैंने इसे आईएमएक्स में करने का विचार किया। मुझे आशा थी कि निर्देशक पूरे दिल से इसे समर्थन देंगे क्योंकि उन्होंने एक सम्मेलन के आयोजन के लिए कहा था। लेकिन यह काम सम्मलेन करने की व्यवस्थाओं की  संख्या, समाधान देने, स्पष्टीकरण प्रदान करने, निदेशक की अनुमतियों लेने और आवश्यक मदद से वंचित करने से बहुत ही कठिन साबित हुआ, खासकर इस लिए क्योंकि मैं अपने भारी शैक्षणिक भार, एमडीपी, और बोर्ड और अन्य  प्रशासनिक कार्य के अलावा साहित्य विकास कार्यों में बुरी तरह उलझा हुआ था" प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा

**संभावना की तलाश**

प्रोफेसर नंदकुमार ने 10 अक्टूबर 1996 को निदेशक को एक पत्र भेजा कि आईएमएक्स में सामरिक प्रबंधन फोरम पहला वार्षिक सम्मेलन होने की संभावना हो सकती है। इस के लिए (अनौपचारिक) फोरम के अध्यक्ष को पत्र का मसौदा तैयार कर के भी दे दिया।

DO NOT COPY

सोमवार 14 अक्टूबर को उन्हें, निदेशक से एक नोट प्राप्त हुआ, जिसमे प्रतिनिधियों की अपेक्षित संख्या पूछी गयी। साथ ही यह भी पूछा गए था  और नए व्याख्यान और भोजन कक्ष की उपलब्धता न होने की स्थिति में कॉनफेरेन्स और रहने खाने की का व्यवस्था होगी।

प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा " मुझे लगा किअगर इस तरह से परिसर के निर्माण की प्रगति दर यही रही , तो एमबीए प्रबेश  में अगले साल भी बढ़ोतरी हो सकती है (जैसा कि उनके द्वारा बोर्ड की बैठक में बताया गया है), इसमें आशंका है।“ उनकी आशंका कुछ महीनों पहले तक परिसर की योजना और विकास समिति के सदस्य के रूप में परियोजना के काम कि धीमी रफ़्तार से बनी थी। एमबीएबैच प्रवेश 30 से बढ़कर 100 करते समय, मात्र 25 दिनों में 120 सीटों वाले  सीटों वाले व्याख्यान कक्ष को पूरा होने के अनुभव प्रोफेसर नंदकुमार को विश्वास दिलाता था कि निर्माण तेज हो सकता है। उन्होंने विचार किया कि सम्मेलन आयोजित करने के लिए कुछ भवनों को पूरा करने में तेजी लाने से एमबीएबैच प्रवेश में वृद्धि सुनिश्चित की जा सकती है जो कि 7 साल से 120 के आसपास लटका हुआ था।

**व्यवस्थाएं**

16 अक्टूबर को, प्रोफेसर नंदकुमार ने उत्तर दिया कि यदि सम्मेलन का आयोजन किया जाना था तो वैकल्पिक व्यवस्था की किस प्रकार की जा सकती है । निदेशक आश्वस्त नहीं थे और महसूस करते थे  कि कई काम चलाऊ व्यवस्थाएं प्रस्तावित की जा रही थीं। चूंकि प्रोफेसर नंदकुमार अपने एमडीपी में बहुत व्यस्त थे, निदेशक ने (प्रो नंदकुमार को) सभी संबंधित सदस्यों की सुविधा के अनुसार निदेशक, परियोजना प्रबंधक और सीएओ की बैठक की व्यवस्था करनी चाहिए। निर्देशक के 17.10.96 के नोट के बाद, प्रोफेसर नंदकुमार को भी सीएओ से एक नोट मिला कि वे 18 से 27 अक्टूबर तक छुट्टी पर रहेंगे ।

प्रोफेसर नंदकुमार इससे बहुत नाराज़ हो गए और निदेशकको लिखा  कि प्रशासनिक मामले को निदेशक आप ही सुलझाएं और उन्हें अंतिम निर्णय के बारे में सूचित किया जाए। उन्होंने परियोजना प्रबंधकऔर सीएओ को भी एक प्रति भेज कर उनकी राय मांगी।

परियोजना प्रबंधकऔर सीएओ के उत्तर बहुत उत्साहजनक थे। प्रोफेसर नंदकुमार ने बोर्ड और कैंपस निर्माण समिति के सदस्य के रूप में उनके साथ काम किया था और वे आश्वस्त थे कि अगर  इन दो लोगों ने अपना मन लगाया, तो संस्थान सम्मेलन को सफलतापूर्वक कर सकता है सकता है। उन्होंने अपने विचार निदेशक को प्रेषित कर दिए।

**अग्रेषण करना**

11 नवंबर को प्रोफेसर नंदकुमार को पता चला कि फोरम के अध्यक्ष के कार्यालय से पता चला ने प्रस्ताव को मंजूरी दे दी थी। लेकिन आईएमएक्स के निदेशक को कोई औपचारिक पत्र नहीं आया था। 14 नवंबर को याद दिलाने के बाद अध्यक्ष ने नंदकुमार को फैक्स द्वारा सहमति भेजी, लेकिन अफसोस के साथ कहा कि कोई भी संकाय सदस्य कोई जिम्मेदारी नहीं ले पाएंगे)। अन्य मॉड्यूल की जिम्मेदारी संभालने के लिए किसी अन्य संस्थान के संकाय सदस्य से कोई पुष्टि नहीं हुई थी। "इसका मतलब था कि मुझे अन्य व्यवस्थाओं के अलावा सभी तीन शैक्षणिक मॉड्यूलों को व्यवस्थित करने की ज़िम्मेदारी भी लेनी होगी", प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा।

DO NOT COPY

प्रोफेसर नंदकुमार ने फैक्स को निदेशक को प्रेषित किया जिसमें नोट किया गया था कि यदि निदेशक आयोजन समिति के अध्यक्ष सहमत हों तो वह भी सम्मलेन का काम आगे बढ़ाने को तैयार हैं, वरना वह यह अध्याय वहीं समाप्त कर देंगे। निर्देशक ने आयोजन सचिव और वित्तीय जिम्मेदारी के बारे में स्पष्टीकरण मांगा। प्रोफेसर नंदकुमार आयोजन सचिव होने के लिए सहमत हो गए और कहा सारा खर्च पंजीकरण शुल्क से ही वहन किया जायेगा।

अंत में, शुक्रवार, 22 नवंबर को, प्रोफेसर नंदकुमार ने इस अध्याय को बंद करने का फैसला किया। 26 नवंबरको सम्मलेन रद्द करने के बारे में भेजे जाने वाले फैक्स का मसौदा तैयार किया, यदि सोमवार 25 नवंबर तक निदेशक ने इस मामले पर निर्णय नहीं लिया ।

**अगला झटका**

28 नवंबर को प्रो विट्ठल, सचिव ने सम्मलेन की व्यवस्था के बारे में पूछताछ की। प्रोफेसर नंदकुमार ने एक उत्तर तैयार किया और निदेशक के अनुमोदन के लिए प्रेषित किया ताकि सम्मेलन के लिए ब्रोशर जारी किया जा सके। निदेशक कुछ शर्तों के अधीन इसे करने के लिए सहमति व्यक्त की हालांकि वह संस्थान द्वारा पंजीकरण शुल्क प्राप्त करने की अनुमति देने के लिए सहमत नहीं थे। इसका मतलब था कि फोरम के नाम पर एक बैंकखाता खोला जाना होगा। इसके लिए यह आवश्यक था कि एक औपचारिक निकाय (formal society) तेजी से बनाया जाए। परन्तु दिसंबर के मध्य में सचिव ने फोरम को एक निकाय के रूप में पंजीकृत करवाने में अपनी असमर्थता व्यक्त की और प्रोफेसर नंदकुमार को ऐसा करने के लिए कहा। प्रोफेसर नंदकुमार के मुँह से निकला कहा, " हे भगवान- अब यह कैसे करूँ?"

**फोरम का गठन**

सौभाग्य से प्रोफेसर नंदकुमार कुछ साल पहले आईएमएक्स के बोर्ड और सोसाइटी के सचिव रहे थे और सोसाइटी ज्ञापन की एक प्रति उनके पास थी। उन्होंने इसे एक नया निकाय बनाने के लिए संशोधित किया। समस्या थी कि अध्यक्ष के हस्ताक्षर कैसे प्राप्त करें, क्योंकि वह बहुत दूर थे। उन्होंने एक सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी के कार्यकारी निदेशक (जिसके बारे में प्रोफेसर नंदकुमार ने एक केस स्टडी कि थी)) के साथ संपर्ककरने की सलाह दी। वह एक दोस्त थे और इसके लिए सहमत हो गए। एक अन्य कंपनी के एमडी, जिसके लिए प्रोफेसर नंदकुमार ने एक परामर्श दिया था, कोषाध्यक्ष बनने पर सहमत हो गए। प्रोफेसर नंदकुमार सोसाइटी के सचिव बन गए। आईएमएक्स के कुछ अन्य संकाय सदस्यों और पहले एफडीपी के प्रतिभागियों ने सोसाइटी के गठन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अन्य सदस्य बन गए।

आईएमएक्स के निदेशक ने आईएमएक्स को पंजीकृत कार्यालय का पता देने के लिए अनुमति देने से मना कर दिया (जब कि यह मुमकिन था) । सौभाग्य से, प्रोफेसर नंदकुमार का शहर में एक घर था, जिसे पंजीकृत कार्यालय बनाया गया। निदेशक ने रजिस्ट्रेशन पेपर को तैयार करने और दाखिल करने में मदद के लिए अपने अनुभवी अधिकारी को मदद करने से मना कर दिया।

DO NOT COPY

आशंका के विपरीत रजिस्ट्रार कार्यालय से कोई भी अड़चन नहीं हुयी, और दो हफ्ते बाद फोरम को एक सोसायटी के रूप में पंजीकृत कर दिया गया, सम्मेलन से सिर्फ एक सप्ताह पहले।

**सम्मेलन**

प्रोजेक्ट मैनेजर ने डाइनिंग हॉल पूरा होने में तेजी लाने के लिए भरपूर सहायता की और अंतिम समय तक भोजन कक्ष में दरवाजा और खिड़कियां लगाई गईं। छात्रों के छात्रावास में तीस कमरे भी सम्मेलन के प्रारंभ से पहले पूरे हो गए। सीएओ ने भी पूरी मदद की।

सम्मेलन में विभिन्न प्रबंधन स्कूलों के 45 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। एक प्रतिनिधि लेखक द्वारा सामरिक प्रबंधन पर एक पुस्तक जारी की गई। प्रो नंदकुमार अपनी (पिछले साल प्रकाशित) केस बुक का इंस्ट्रक्टर मैनुअल (जिसका पहले एफडीपी के प्रतिभागियों ने अनुरोध किया था) भी पूरा कर जारी किया। कुछ प्रबंध संस्थानों के निदेशको और विश्वविद्यालय के कुलपति भी सम्मेलन में भाग लेने आये ।

अंतिम दिन, फोरम के नए पदाधिकारियों के लिए चुनाव आयोजित किया गया था। दुर्भाग्य से, किसी ने भी किसी भी पद के लिए आईएमएक्स निदेशक के नाम का प्रस्ताव नहीं किया। "मैंने भी नहीं, क्योंकि मैं आगे निदेशक के अनुरोध पर कोई भी शैक्षणिक कार्यक्रम नहीं करना चाहता था। एक अनुभव जीवन भर के लिए बहुत बड़ा सबक था" प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा।

निदेशक, प्रोफेसर नंदकुमार ने पत्र पर टिप्पणी करते हुए कहा, " मैं बहुत बेहद दुखी हुआ था लेकिन खुश भी था कि अब एमबीए छात्रावास के कम से कम एक 60 कमरे और भोजन कक्ष का परिचालन सुनिश्चित हो गया  और एमबीए में प्रवेश बढ़कर 180 हो जायेगा, जो सात साल तक 120 के आस पास लटका था।“ उन्होंने कहा कि “एक इमारत को पूरा करने के लिए एक शैक्षणिक कार्यक्रम उद्घाटन करने का अनुभव मेरे लिए एक बड़ा सबक था, जिसने मुझे एक अन्य संस्थान के निर्माण को पूरा करने में मदद की (जो अधर में लटक गया था)  जब मैं वहां निर्देशक बन कर गया।

प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा, "मेरे विषय क्षेत्र में संकाय सदस्यों की वार्षिक बातचीत के लिए मंच का गठन के साथ  मेरा 20 साल पुराना एक सपना भी साकार हो गया ", प्रोफेसर नंदकुमार ने कहा।

"आईएमएक्स में 2001 तक कोई और सम्मेलन नहीं आयोजित हुआ। सन का सम्मलेन भी फोरम के तत्वावधान में आयोजित किया था। लेकिन यह एक और कहानी है", प्रोफेसर नंदकुमार मुस्कुराये।

"यदि सम्मेलन का आयोजन करना संभव था, तो निदेशक को पहली जगह में क्यों स्वीकृति नहीं मिली? क्यों दोनों का दिल दुखा? क्या यह परिहार्य था? अगले 4 सालों में कोई अन्य सम्मेलन क्यों नहीं आयोजित किया गया? क्या फोरम बच जाएगा? क्या समाज में ऐसे अनाथ संगठनों की भी कोई भूमिका है?" ये कुछ सवाल थे, जो सेवानिवृत्ति के बाद भी डॉ नंदकुमार को परेशान करते थे।

DO NOT COPY

DO NOT COPY